

## परीक्षा घोटालों की नैतिक अनविरयता

"जो व्यवस्था बेईमानी को पुरस्कृत करती है, वह अपनी वैधता के आधार को ही कमजोर करती है।" यह कथन वर्ष 2024 में परीक्षा घोटालों की शृंखला से उत्पन्न नैतिक संकट को रेखांकित करता है, जिसने लाखों इच्छुक उम्मीदवारों को अत्यधिक प्रभावित किया है। राष्ट्रीय स्तर की परीक्षाओं में पेपर लीक और सुरक्षा उल्लंघन जैसे मामलों ने छात्रों, अभिभावकों तथा शक्तिषकों के आत्मविश्वास को हिला दिया। ये घटनाएँ तार्किक वफिलताओं से परे थीं, जो योग्यता और प्रयास को पुरस्कृत करने वाली प्रणाली में एक महत्वपूर्ण नैतिक उल्लंघन का प्रतिनिधित्व करती हैं। आर्थिक रूप से वंचित उम्मीदवारों के लिये, ऐसी परीक्षाएँ अक्सर बेहतर भवषिय का एकमात्र माध्यम होती हैं, जोगरीबी और असमानता की बाधाओं को पार करने की आशा प्रदान करती हैं।

ये घटनाएँ सरिफ़ प्रशासनिक वफिलताएँ नहीं हैं, बल्कि गंभीर नैतिक उल्लंघन हैं जो नषिपक्षता, योग्यता और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों को खोखला करती हैं। कई छात्रों के लिये, वशिषकर आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों के लिये, प्रतियोगी परीक्षाएँ आगे बढ़ने की एकमात्र उम्मीद होती हैं। भ्रष्टाचार और बेईमानी का गठजोड़ इन उम्मीदों को नषट कर देता है, असमानता को बढ़ावा देता है तथा संस्थानों में लोगों का भरोसा खत्म कर देता है। इस मुद्दे के केंद्र में एक महत्वपूर्ण नैतिक प्रश्न है - समाज प्रयास और योग्यता को पुरस्कृत करने वाली व्यवस्था में ईमानदारी कैसे बनाए रख सकता है?

## परीक्षा घोटालों के मूल कारण क्या हैं?

- प्रणालीगत वफिलताएँ
  - कमजोर नगिरानी और भ्रष्टाचार: अपर्याप्त नगिरानी, खराब सुरक्षा तथा भ्रष्टाचार (जैसे, रशिवतखोरी, परीक्षा पेपर लीक) परीक्षा प्रक्रिया की वशिषसनीयता को कमजोर करते हैं।
  - अपर्याप्त बुनयादी ढाँचा: भीड़भाड़ वाले केंद्र, पुरानी तकनीक और अपर्याप्त सुरक्षा उपाय कदाचार के अवसर तथा धोखाधड़ी के अवसर बढ़ा सकते हैं।
  - नीतप्रवर्तन का अभाव: कमजोर वनियमन और असंगत दंड व्यक्तियों को परणामों के डर के बनिा धोखाधड़ी करने के लिये प्रोत्साहित करते हैं।
- सामाजिक दबाव
  - उच्च अपेक्षाएँ और प्रतसिप्रर्द्धा: माता-पति, सहपाठियों से तीव्र शैक्षणिक दबाव तथा छात्रवृत्त और नौकरियों के लिये प्रतसिप्रर्द्धी माहिल छात्रों को अनैतिक प्रथाओं की ओर धकेलता है।
- व्यक्तगत नैतिक वफिलताएँ
  - ईमानदारी और सहभागिता का अभाव: छात्र असफलता के डर, तनाव या व्यक्तगत नैतिकता की कमी के कारण नकल करते हैं, जसिे अक्सर शक्तिषकों या परीक्षकों द्वारा समर्थित किया जाता है।
  - नैतिक औचित्य: कथति प्रणालीगत अनुचितता के कारण धोखाधड़ी को सामान्य या आवश्यक मान लेना नैतिक मानकों को और भी अधिक कमजोर कर देता है।

## पेपर लीक और परीक्षा घोटाले के कारण उत्पन्न होने वाली नैतिक चतिाएँ क्या हैं?

- नषिपक्षता और योग्यता का उल्लंघन: अभ्यर्थी इन परीक्षाओं में प्रतसिप्रर्द्धा करने के लिये वर्षों का समर्पित प्रयास और महत्वपूर्ण संसाधन लगाते हैं तथा आशा करते हैं कि उनके कौशल व ज्ञान का नषिपक्ष मूल्यांकन होगा।
  - हालाँकि, पेपर लीक से कुछ चुनदिा लोगों को अनुचित लाभ मिलता है, कतिु यहसमानता और योग्यता के सिद्धांतों को पूरी तरह से पराजति करता है।
- मेहनती और योग्य उम्मीदवार अक्सर हतोत्साहित महसूस करते हैं तथा व्यवस्था पर से वशिवास खो देते हैं, वशिषकर जब उन्हें पता चलता है कि सफलता उनके वास्तविक प्रयासों से नहीं, बल्कि अनैतिक प्रथाओं से जुडी है।
- सार्वजनिक वशिवास की कमी: घोटाले संस्थानों की अखंडता को कमजोर करते हैं, क्यौकलगातार पेपर लीक होने से परीक्षा बोर्डों और नषिपक्षता बनाए रखने के लिये ज़मिेदार अन्य शासी नकियायों में जनता का वशिवास खत्म हो जाता है।
  - वशिवास का यह क्षरण परीक्षा प्रणाली तथा व्यापक रूप से शासन और संस्थागत प्रक्रियाओं मेंसामाजिक वशिवास पर प्रभाव डालता है।
- भ्रष्टाचार को बढ़ावा देना: इन घोटालों में अक्सर अधिकारियों, बचौलियों और उम्मीदवारों का एक सुव्यवस्थति गठजोड़ शामिल होता है, जो प्रणालीगत भ्रष्टाचार को बढ़ावा देता है एवं अनैतिक प्रथाओं को बनाए रखता है।

- रशिवत और लेन-देन के माध्यम से बेईमानी का मुद्रीकरण, कदाचार के लिये एक काला बाज़ार बनाता है, जिससे भ्रष्टाचार और भी अधिक बढ़ जाता है।
- असमानता में वृद्धि: कमज़ोर समूह, विशेष रूप से आर्थिक रूप से कमज़ोर उम्मीदवार, इन कदाचारों का परिणाम भुगतते हैं, क्योंकि वे भ्रष्ट परिणालयों में शामिल होने या लीक हुए पेपरों के लिये भुगतान करने में सक्षम नहीं होते हैं।
  - इसके विपरीत, धनी व्यक्ति निष्पक्ष प्रतस्पर्द्धा को दरकिनार करने के लिये अपने वित्तीय संसाधनों का दुरुपयोग करते हैं, जिससे सामाजिक तथा आर्थिक असमानता और गहरी हो जाती है।
- अभ्यर्थियों पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव: बार-बार प्रश्न-पत्र लीक होने की घटनाएँ और अनुचित परिणामों के भय से अभ्यर्थियों में गंभीर चिंता, नरिशा तथा प्रेरणा की कमी हो जाती है।
- धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार को सामान्य मानने से युवा पीढ़ी में नरिशा की भावना पैदा हो सकती है, जिससे नैतिक मूल्यों का क्षरण हो सकता है तथा बेईमानी की संस्कृति को बढ़ावा मलि सकता है।

## पेपर लीक और परीक्षा घोटालों पर वभिन्न सामाजिक-आर्थिक दृष्टिकोण क्या हैं?

- सामाजिक गतिशीलता पर प्रभाव: प्रतयोगी परीक्षाएँ अक्सर आर्थिक रूप से कमज़ोर उम्मीदवारों के लिये ऊपर की ओर गतिशीलता प्राप्त करने और गरीबी से बचने के लिये एक जीवन रेखा होती हैं।
  - पेपर लीक से प्रणालीगत असमानता को बल मलिता है, जिससे हाशिये पर पड़े समूह गरीबी में फँस जाते हैं, जबकि इसका लाभ उन धनी लोगों को मलिता है, जो पेपर लीक या रशिवत का खर्च उठा सकते हैं, जिससे विशेषाधिकार और असमानता बढ़ती है।
- योग्यता आधारित आदर्श को कमज़ोर करना: एक निष्पक्ष परीक्षा प्रणाली योग्यता आधारित समाज के लिये महत्त्वपूर्ण है; जब इससे समझौता कया जाता है, तो योग्य उम्मीदवार अवसर खो देते हैं, जिससे नरिशा और मोहभंग को बढ़ावा मलिता है।
  - योग्यता के क्षरण के परिणामस्वरूप अयोग्य व्यक्ति महत्त्वपूर्ण पदों पर आसीन हो जाते हैं, जिससे कार्यबल की दक्षता और योग्यता कम हो जाती है।
- भ्रष्टाचार की आर्थिक लागत: पेपर लीक से कालाबाज़ारी की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मलिता है, संसाधनों को उत्पादक उपयोगों से हटाकर रशिवतखोरी और भ्रष्टाचार में लगा दिया जाता है, जिससे महत्त्वपूर्ण आर्थिक नुकसान होता है।
  - राज्य को पुनः परीक्षा और सुरक्षा बढ़ाने के लिये अतिरिक्त लागत उठानी पड़ती है, जिससे शिक्षा तथा स्वास्थ्य सेवा जैसी आवश्यक सार्वजनिक सेवाओं से ध्यान हटा लिया जाता है।
- मानव पूंजी की हानि: परीक्षाओं में लगातार भ्रष्टाचार प्रतभिषाली व्यक्तियों को प्रणाली में भाग लेने से हतोत्साहित करता है, जिससे प्रतभिषाली पलायन होता है या कुशल मानव संसाधनों का कम उपयोग होता है।
  - इससे वैश्विक अर्थव्यवस्था में देश के समग्र विकास और प्रतस्पर्द्धात्मकता पर असर पड़ता है।
- मनोवैज्ञानिक और सामाजिक विखंडन: वंचित समुदायों के अभ्यर्थी व्यवस्था द्वारा अलग-थलग तथा ठगा हुआ महसूस करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप सामाजिक अशांति, वरिध एवं सामाजिक संरचनाओं में अविश्वास पैदा होता है।

## पेपर लीक रोकने के लिये सरकार के क्या उपाय हैं?

- धोखाधड़ी वरिधी अधिनियम, 2024 : केंद्र सरकार ने सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम) अधिनियम, 2024 लागू कया, जिसका उद्देश्य पेपर लीक और धोखाधड़ी जैसी परीक्षा संबंधी गड़बड़यों से निपटना है।
  - यह अधिनियम लीक करने या अनुचित साधनों को सुविधाजनक बनाने में शामिल लोगों के लिये जुरमाना और कारावास सहित कठोर दंड का प्रावधान करता है।
  - इसमें परीक्षा की अखंडता और पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिये उन्नत सुरक्षा उपाय, बायोमेट्रिक सत्यापन तथा स्वतंत्र नरिक्षण को अनिवार्य बनाया गया है।
  - कानून में स्वतंत्र नरिक्षण समितियों की भी स्थापना की गई है, जिनका कार्य अनयिमतिताओं की जाँच करना तथा परीक्षा प्रक्रिया में पारदर्शिता सुनिश्चित करना है।
- डिजिटल पहल: सरकार मानवीय हस्तक्षेप को न्यूनतम करने तथा लीक के जोखिम को कम करने के लिये कंप्यूटर आधारित परीक्षण को अपनाने को बढ़ावा दे रही है।
  - परीक्षाओं के दौरान वसिगतयों का पता लगाने और उन्हें चहिनति करने के लिये उन्नत एआई-संचालित उपकरणों का उपयोग कया जा रहा है, जिससे पारदर्शिता तथा जवाबदेही बढ़ेगी।

## आगे की राह

- कठोर दंडात्मक उपाय : परीक्षा से संबंधित भ्रष्टाचार में शामिल अधिकारयों या व्यक्तयों के प्रतशून्य-सहषिणुता की नीतियों को सख्ती से लागू कया जाना चाहयि।
  - पारदर्शी जाँच प्रक्रियाएँ स्थापित करने और परिणामों के बारे में नयिमति रूप से रिपोर्ट प्रकाशित करने से जनता का विश्वास पुनः स्थापित हो सकता है।
  - दोषी पाए गए लोगों के लिये स्पष्ट और सुसंगत दंड संभावित अपराधयों के लिये एक मज़बूत नवारक के रूप में कार्य करेगा तथा प्रणाली की अखंडता सुनिश्चित करेगा।
- समुदाय-संचालित जवाबदेही और नगरानी: नागरिक समाज संगठनों, छात्र नकियों तथा सामुदायिक नेताओं को परीक्षा प्रक्रियाओं की नगरानी में सक्रिय रूप से शामिल होना चाहयि।
  - वे अधिक पारदर्शिता की वकालत कर सकते हैं, हाशिये पर पड़े समूहों का प्रतनिधित्व कर सकते हैं तथा यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि नैतिक प्रथाओं का पालन कया जाए।

- स्कूलों और कॉलेजों में सहकर्मियों की जवाबदेही भी ऐसा माहौल बनाने में सहायक हो सकती है, जहाँ धोखाधड़ी तथा अनैतिक व्यवहार की तुरंत रिपोर्ट की जाए एवं उसे हतोत्साहित किया जाए।
- **वहसिलब्लोअर्स को सशक्त बनाना:** पेपर लीक के पीछे के भ्रष्टाचार नेटवर्क से निपटने के लिये, सशक्त वहसिलब्लोअर सुरक्षा तंत्र बनाना आवश्यक है।
  - इसमें **गुमनामी की रक्षा करना**, प्रतियोगिता से सुरक्षा सुनिश्चित करना तथा कदाचार की सूचना देने पर पुरस्कार देना शामिल है, जो शिक्षा प्रणाली में पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देने के लिये महत्वपूर्ण है।
- **तकनीकी प्रगतः ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी और एआई-आधारित समाधान** परीक्षा प्रणालियों को सुरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।
  - **ब्लॉकचेन का** उपयोग परीक्षा पत्रों के छेड़छाड़-रहित भंडारण और वितरण को सुनिश्चित करने के लिये किया जा सकता है, जबकि एआई वास्तविक समय में धोखाधड़ी, प्रतियोगिता या पैटर्न-आधारित कदाचार जैसी अनियमितताओं का पता लगा सकता है और उन्हें चिह्नित कर सकता है, जिससे समग्र **पारदर्शिता तथा जवाबदेही बढ़ जाती है।**
- **नैतिक शिक्षा को बढ़ावा देना:** स्कूलों और कॉलेजों को अपने पाठ्यक्रम में **नैतिक शिक्षा को शामिल करना चाहिये** ताकि किम उमर से ही छात्रों में ईमानदारी, ज़िम्मेदारी तथा नैतिक आचरण की भावना पैदा की जा सके।
  - नष्पिकषता, योग्यता और सामाजिक न्याय के बारे में चर्चा को प्रोत्साहित करने से नैतिक मूल्यों की नींव रखी जा सकती है तथा छात्रों को परीक्षाओं सहित जीवन के सभी पहलुओं में इन सदिधांतों को बनाए रखने के लिये सशक्त बनाया जा सकता है।
- **जन जागरूकता अभियान:** राष्ट्रीय **जागरूकता अभियान शुरू करने से** जनता, विशेषकर छात्रों और अभिभावकों को पेपर लीक तथा कदाचार से होने वाले **दीर्घकालिक नुकसान के बारे में शिक्षित किया जा सकता है।**
  - इन अभियानों में **नैतिक नहितार्थों**, योग्यता-आधारित मूल्यांकन के महत्त्व और भ्रष्टाचार की सामाजिक लागत पर ज़ोर दिया जाना चाहिये।
  - **ईमानदारी** की संस्कृति को बढ़ावा दिया जाना चाहिये, जहाँ बेईमानी सामाजिक रूप से अस्वीकार्य हो।

## नष्पिकष

परीक्षा प्रणाली में **वश्वास, नष्पिकषता और सामाजिक गतशीलता** को बहाल करने के लिये, **नैतिक शिक्षा को एकीकृत करना, प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना, मुखबरीं को सशक्त बनाना** तथा **पारदर्शी जाँच सुनिश्चित करना** आवश्यक है। **सभी हतधारकों की ओर से ईमानदारी** के लिये सामूहिक प्रतबिद्धता योग्यता को बनाए रखने एवं सभी उम्मीदवारों के लिये समान अवसर सुनिश्चित करने में मदद करेगी, चाहे उनकी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो।